

Name: _____ Date: NOV. 3, 2017

- (1) F स्त्रीला आदिंगनं सुख चंद्रायै परे च। (आत्मार्तुं सुख)
- (2) F ज्ञानमां मज्ज लनेला मुनिने आत्मि गुडुजाणा खण्डेवापु न सुख छे ते मात्र वसनेन्द्रिय द्वारा न करी शक्य
- (3) I सम्यग् दर्शि-ज्ञान-चारित्र्यी खंडेला सिवाय मज्जला धरती (आपत्ती) नही.
- (4) I साधुनां तप तो गुह्य न होय तेनी अरोल न होय
- (5) I उत्तममर स्तोत्रांनी छडी गाथा सरस्वती देवीनी आराधना माटे छे.
- (6) I खंडे वसने चारित्र्य पर्यायवाणी साधु अनुसरोयाति देवीनी लोकोपदेश्याना मनसि स्थितानी प्रसन्नताने पद्मे भय
- (7) I धरत वस्तुना राग रानी अनिष्ट वस्तु परना देखेने अरकावणे ते शम कसोय छे.
- (8) F चंद्रकोश्यानी इष्टि इया वरसावनारी रनी
- (9) I आध्यात्मि सुख पुण्यतर्पेणा उदय छे मना छे.
- (10) F लोकोपदेश्यानी दिशस पृथिव्य मुनिने ज्ञानपर्यायनी पृथिव्य ध्याई दीय छे.
- (11) F लोकोपदेश्या खंडेले शरीरमां सुखनी प्राप्ति दीय. (मज्जला अरकावणे सुखनी प्राप्ति)
- (12) I साधु सामे साधुनी कडो सदन तरे तेने उदीरला तरेयाय छे. (मज्जला अरकावणे सुखनी प्राप्ति)
- (13) F साधु जवन मात्र पुण्यानुबंध पुण्य पाभवा माटे न छे.
- (14) I खंडे दिवसना चारित्र्यन) पर्यायवाणी साधुने चंद्र पक्ष पदन तरे छे.
- (15) I रमा गुह्यस्थानी आत्मा "वीतरागी" तरेयाय छे.
- (16) F स्त्रीला आदिंगनं सुख जिदुपादि छे.
- (17) F संप्रति मलाराज पूर्वमवमां साधु रना.
- (18) F आध्यात्मि सुख स्वतंत्र छे तेम न तरे शक्य (मज्जला अरकावणे सुखनी प्राप्ति)
- (19) I ज्ञानपीयूषं खंडे जंडु कषायीनी जागने मुखावी शक छे.
- (20) F उत्तममरनी छडी गाथामां मानतुंगसुरीक तरे छे छे हुं ज्ञानी हुं खंडेले च आपनी मित्त तरे च चंदार दीय छे.

अल्पज्ञानं (छे लेशवा. शुद्ध-पद्म-तपो) उत्तममरनी छडी गाथामां मानतुंगसुरीक तरे छे छे हुं ज्ञानी हुं खंडेले च आपनी मित्त तरे च चंदार दीय छे.